स्वादिष्ट सेबों के लिए प्रसिद्ध चौबटिया स्थित फलों के उद्यान और फल अनुसंधान केंद्र, तथा मछली पकड़ने के लिए प्रसिद्ध 1903 में ब्रितानी सरकार द्वारा निर्मित भालू बांध आदि नजदीकी दर्शनीय स्थल हैं।

रानी खेत के सौन्दर्य को आँखों में बसाने के सपने को लेकर हम लोग सोने की तैयारी में लग गये। खाना साथ लाये थे। उसे गाड़ी में ही खा लिया था। अखलाक साहब ने सीमित संसाधनों के बावजूद ठीक व्यस्था की थी। असल में गेस्टहाउस के रूप में तब्दील भवन का नाम आर डी स्टेट है। सौ साल से अधिक का बना पुराना यूरोपियन तर्ज का बँगला है। वाकई में जंगल के काफी अन्दर स्थित है। ऊँचे-ऊँचे चीड़ देवदार के पेड़ों के बीच रात की नीरवता में बजाय किसी भी तरह के भय के मुझे वहाँ अजीब-सा रौनक भरा वातावरण लग रहा था। टिमटिमाते तीन-चार बल्ब आरडी स्टेट के चारों तरफ मद्धिम-मद्धिम रोशनी बिखेरते बंगले को अपने आगोश में समेटे थे। अखलाक साहब ने हम लोगों तथाकथित रूप से वीआईपी रूम दिया था। वास्तव में यह रूम अपने समय में खास ही रह होगा। लकड़ी से निर्मित की उसकी आन्तरिक सज्जा बेजोड़ थी। बचे हुए फर्नीचर नायाब थे। चार बेड पर सफेद धुली चादर बिछी थी। हमारे कमरे के पीछे कमरे से लगा हुआ स्थान अस्थाई किचेन के रूप में तब्दील कर दिया गया था। वहाँ एक गैस सिलेन्डर और पुराने चूल्हे की भी व्यवस्था थी। हम लोग थके थे। अखलाक साहब ने चाय पिलवाई। उसके बाद हम लोग सो गये।

अगले दिन मेरी नींद जल्दी ही टूट गयी। बाहर सन्नाटा था। वातावरण बेहद शांत और खूबसूरत था। अच्छी-खासी सर्दी थी। आरडी स्टेट की समतल जमीन के नीचे चीड़ और देवदार के पेड़ों के बीच छोटी-सी लकड़ी की कॉटेज के सामने सुरक्षाकर्मी रईस सफाई में लगे थे। उनकी दो बेटियाँ और पत्नी भी वहीं थे। बेटियाँ खेल रहे थीं। पत्नी चहलकदमी कर रही थीं। अभी अखलाक साहब सो ही रहे थे। हमारी प्रतीक्षा में देर रात में सोये थे। उनकी पत्नी जरूर उठ चुकी थीं। धीरे-धीरे धूप पेड़ों की फुनगियों से आरडी स्टेट की टीन की ढलवाँ छतों से उतरती सामने के समतल मैदान को अपने दायरे में ले रही थीं। जब्बार भी उठ गये थे। वह किनारे छतनार दरख्त के नीचे कार की सफाई में लगे थे। मैंने आरडी स्टेट के बरामदे में पड़ी ढेरों कुर्सियों में से एक कुर्सी निकाली। धूप में बैठ गया। हमारे शहर में तो कभी-कभी मार्च के जाते-जाते लू का एहसास होने लगता है। यहाँ धूप सुकून दे रही थी। मैं अकेला बैठा सामने आरडी स्टेट के भवन को निहारने लगा।

आरडी स्टेट के बारे में मैंने इंटरनेट के जरिये जानकारी हासिल करनी चाही लेकिन मिली नहीं। बस एकाध जानकार ने बताया कि इस भवन को उन्नीस सौ अट्ठावन में तत्कालीन कुलपति कर्नल बशीर हसन जैदी ने खरीदा था। मन उसी के इतिहास को जानने की जिज्ञासा में उलझा था। इसी बीच जब्बार ने भीतर जाकर चाय तैयार की। समीरा भी उठ गयी थीं। मुझे चाय के लिए बुलाया गया। हम लोग चाय पी कर बाहर आ गये। बच्चे अभी सो ही रहे थे। आज आराम का ही कार्यक्रम था। अखलाक साहब भी उठ गये थे। अलीगढ़ से कुछ लोग और आने वाले थे। वह उनकी प्रतीक्षा में काफी देर तक जगते रहे। बाद में पता चला कि उन लोगों का कार्यक्रम बदल गया। वह अपनी चाय की प्याली के साथ मेरे लिए भी चाय की प्याली लिए बाहर आ गये। अखलाक साहब दिलचस्प व्यक्तित्व के मालिक हैं। यह हमें उनसे मोबाइल पर होने वाले वार्तालाप से ही पता चल गया था। यूँ ही बाकायदा परिचय के लिए रस्मी बातें होने लगीं। पता यह चला कि वह आरडी स्टेट की देखभाल के लिए नियुक्त केयर टेकर की भूमिका से कहीं आगे जाकर अपने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के प्रति प्रेम के आन्तिरक जज्बे के कारण आरडी स्टेट की एक बच्चे की तरह देखभाल करते हैं। उसकी तरक्की और उसके लिए संसाधन एकत्रित करने के लिए विश्वविद्यालय से बराबर लिखा-पढ़ी भी करते रहते हैं। उसी का परिणाम यह है कि अभी पिछले वर्ष कुलपति और उपकुलपति तथा विश्वविद्यालय के इंजीनियर के साथ एक टीम भी आयी। आरडी स्टेट पुनरोद्धार की योजना बन चुकी है। बस अमली जामा पहनाना बाकी है। चूँकि नगर कैंट क्षेत्र के प्रबंधन में आता है इसलिए वहाँ अनापत्ति प्रमाणपत्र मिलते ही इसके पुनराद्धार का काम आरम्भ हो जायेगा। यह आशा इसलिए और भी बलवती हो रही है कि वर्तमान में विश्वविद्यालय के कुलपति और उप कुलपति दोनों का संबंध थल सेना से ही है। उपकुलपति महोदय तो रानी खेत में रहे भी हैं। आज-कल इसी आशा के बल पर अखलाक साहब आरडी स्टेट के पुनरोद्धार होने को लेकर आश्वस्त से खुश-खुश हैं। वह अपनी तरफ से जितना संभव हो सकता है मरम्मत साफ-सफाई ओर देखभाल में लगे रहते हैं। चारों तरफ लगे फूल-पत्ते और पेड़-पौधे इस बात की ताईद कर रहे थे। उन्हीं में विचरण करता हुए एक बार मेरे मन में फिर से आरडी स्टेट के इतिहास के संदर्भ में जिज्ञासा हुई। मैंने उनसे इसका उल्लेख किया। उन्होंने वहाँ वृद्धों और दूसरे साधनों द्वारा अभी तक इकट्ठी की गयी बड़ी महत्त्वपूर्ण जानकारी दी।

अंग्रेज कैप्टन विलियम ह्यूसन ने अपनी पत्नी आरडी के लिए रानीखेत में बनने वाले यूरोपियन शैली के आरम्भिक भवनों में आरडी के नाम से एक भवन बनवाया। इसे आरडी स्टेट कहा जाने लगा। गर्मी में वह अपने अमले के साथ यहाँ आकर ठहरता था। कर्मचारियों के लिए आरडी स्टेट के चारों तरफ बने विविध आवास इस बात के सुबूत के तौर पर दखे जा सकते हैं। घोड़ों के लिए बनी घुड़साल भी इस बात की गवाही देती है। हालांकि एक बार लगी आग से वह समाप्तप्राय है। एक तरफ चार कॉटेज और हैं लेकिन वह कब अपना अस्तित्व खो दें कहा नहीं जा सकता है। हाँ तीन बिस्तरों का एक लकड़ी का काटेज जरूर सही-सलामत है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल बशीर हसन जैदी साहब का अपनी जवानी के दिनों में वहाँ आना-जाना था। सेना से